

प्रारंभिक परीक्षा

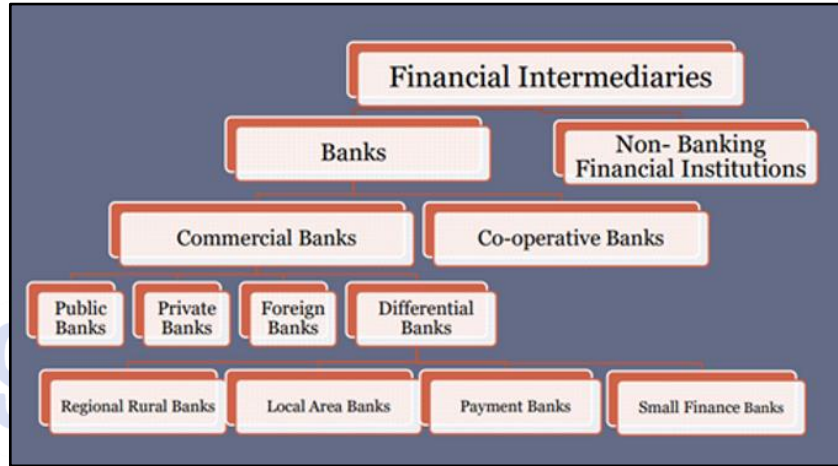
लघु वित्त बैंक (Small Finance Banks)

संदर्भ

जन लघु वित्त बैंक लिमिटेड ने भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) को एक आवेदन प्रस्तुत कर लघु वित्त बैंक से सार्वभौमिक बैंक में स्वेच्छिक परिवर्तन के लिए अनुमोदन मांगा है।

लघु वित्त बैंकों के बारे में -

- **मुख्य उद्देश्य:**
 - **वित्तीय समावेशन:** ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों तक बैंकिंग सेवाओं का विस्तार करना।
 - **सूक्ष्म वित्त विस्तार:** निम्न आय वर्ग को किरायायती ऋण और बैंकिंग सेवाएं प्रदान करना।
 - **ऋण सुलभता:** छोटे उद्यमों, सीमांत किसानों के लिए ऋण उपलब्धता में वृद्धि, और सूक्ष्म उद्यमी।
- **नियामक ढांचा:**
 - नचिकेत मोर समिति (2014) की सिफारिशों के आधार पर स्थापित।
 - विभेदित बैंकिंग लाइसेंस के अंतर्गत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा लाइसेंस प्राप्त और विनियमित।
- **पात्रता एवं परिचालन मानदंड:**
 - न्यूनतम चुकता इक्विटी पूंजी: ₹200 करोड़।
 - समायोजित निवल बैंक ऋण (ANBC) का 75% प्राथमिकता क्षेत्र को ऋण देने के लिए आवंटित किया जाना चाहिए।
 - ऋण पोर्टफोलियो का कम से कम 50%, 25 लाख रुपये तक के ऋण और अग्रिम होना चाहिए।
 - बैंकिंग सुविधा से वंचित ग्रामीण क्षेत्रों में कम से कम 25% शाखाएं खोलना अनिवार्य है।
- **अनुमत गतिविधियाँ:**
 - जमा (बचत, चालू, सावधि जमा) स्वीकार करना।
 - छोटे-छोटे ऋण, मुख्यतः सूक्ष्म वित्त और एमएसएमई ऋण उपलब्ध कराना।
 - डेबिट और एटीएम कार्ड जारी करना।
 - RBI की मंजूरी के बाद वित्तीय उत्पादों (बीमा, म्यूचुअल फंड, पेंशन) का वितरण।
- **निषिद्ध गतिविधियाँ:**
 - बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट ऋण देने में सीधे तौर पर शामिल नहीं हो सकते।
 - गैर-बैंकिंग वित्तीय सेवाओं के लिए सहायक कम्पनियां स्थापित करने की अनुमति नहीं है।
 - किसी भी विदेशी परिचालन की अनुमति नहीं है।



तथ्य

- RBI ने SFB को सीमित दायरे(2023) में विदेशी मुद्रा लेनदेन के लिए अधिकृत डीलर (श्रेणी-II) लाइसेंस के लिए आवेदन करने की अनुमति दी।
- RBI अधिनियम, 1934 की धारा 42 के तहत 'अनुसूचित बैंकों' का दर्जा हासिल कर लिया।
- भारत में अभी तक किसी भी लघु वित्त बैंक ने सार्वभौमिक बैंक में पूर्ण रूपांतरण पूरा नहीं किया है।

लघु वित्त बैंकों (SFB) और सार्वभौमिक बैंकों की तुलना

पहलू	लघु वित्त बैंक (SFB)	सार्वभौमिक बैंक
गतिविधियों का दायरा	मुख्य रूप से छोटे व्यवसायों, किसानों, एमएसएमई जैसे वंचित वर्गों की सेवा करना।	कॉर्पोरेट और खुदरा बैंकिंग, निवेश, विदेशी मुद्रा आदि सहित सभी ग्राहक वर्गों को सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करना।
न्यूनतम पूंजी आवश्यकता	₹200 करोड़	₹500 करोड़
ऋण आवश्यकताएँ	प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को समायोजित निवल बैंक ऋण का न्यूनतम 75%	प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों को शुद्ध बैंक ऋण का 40%
फोकस खंड	बैंकिंग सुविधा रहित, अर्द्ध-शहरी, ग्रामीण, सूक्ष्म उद्यम	सभी ग्राहक वर्ग (खुदरा, कॉर्पोरेट, आदि)
शाखा विस्तार	ग्रामीण/बैंक रहित क्षेत्रों में 25% शाखाएँ अनिवार्य	कोई अनिवार्य विशिष्ट अनुपात नहीं, लेकिन ग्रामीण उपस्थिति मानदंड हैं
विदेशी परिचालन	अनुमति नहीं है	अनुमत
नियामक ढांचा	RBI के विभेदित बैंकिंग मानदंडों के तहत विनियमित	RBI के सार्वभौमिक बैंकिंग मानदंडों के तहत विनियमित
जमा और उधार	जमा स्वीकार करना; छोटे-छोटे ऋण पर ध्यान केन्द्रित करना	जमा स्वीकार करना; विविध ऋण और वित्तीय सेवाएं
निवेश गतिविधियाँ	सीमित भागीदारी	व्यापक निवेश बैंकिंग और बाजार परिचालन

स्रोत: [CNBC TV18](#)

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA)

संदर्भ

"विश्व जनसंख्या की स्थिति 2025: वास्तविक प्रजनन संकट" शीर्षक से संयुक्त राष्ट्र की नई रिपोर्ट जारी की गई।

रिपोर्ट की मुख्य बातें -

- अप्रैल 2025 तक भारत की जनसंख्या 146.39 करोड़ तक पहुँच गई है, जिससे यह दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है।
- भारत की कुल प्रजनन दर (TFR) घटकर 1.9 हो गई है, जो 2.1 के प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है, जो दीर्घकालिक जनसांख्यिकीय बदलाव का संकेत है।
- अनुमान है कि लगभग 40 वर्षों में जनसंख्या में गिरावट शुरू होने से पहले यह 170 करोड़ तक पहुँच जाएगी।
- रिपोर्ट में "वास्तविक प्रजनन संकट" पर जोर दिया गया है, जहाँ लाखों लोग अपने प्रजनन लक्ष्यों को प्राप्त करने में असमर्थ हैं, न कि केवल अधिक जनसंख्या या कम जनसंख्या के कारण।
- भारत की 68% आबादी कामकाजी आयु वर्ग (15-64 वर्ष) में है, जो नीति निर्माताओं के लिए अवसर और चुनौती दोनों प्रस्तुत करती है।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (UNFPA) -

- स्थापना: 1967 (एक ट्रस्ट फंड के रूप में), 1969 से परिचालन।
- 1987 में इसका नाम बदलकर संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या गतिविधियों के लिए कोष से संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष कर दिया गया।
- प्रकार: संयुक्त राष्ट्र महासभा का सहायक अंग।
- आदर्श वाक्य: "सभी के लिए अधिकार और विकल्प सुनिश्चित करना।"
- मिशन: एक ऐसा विश्व बनाना जहाँ हर गर्भावस्था वांछित हो, प्रसव सुरक्षित हो, तथा हर युवा की क्षमता पूरी हो।
- फोकस क्षेत्र: प्रजनन स्वास्थ्य, परिवार नियोजन, मातृ स्वास्थ्य, लैंगिक समानता।
- 2030 तक प्रमुख लक्ष्य (तीन शून्य)
 - परिवार नियोजन की अपूर्ण आवश्यकता को शून्य करना
 - रोकती जा सकने वाली मातृ मृत्यु को शून्य करना
 - लिंग आधारित हिंसा और हानिकारक प्रथाओं (जैसे बाल विवाह, FGM) को शून्य करना
- वैश्विक एवं देश स्तरीय कार्य:
 - 150 से अधिक देशों में सक्रिय
 - राष्ट्रीय नियोजन का समर्थन करता है और जनसंख्या-स्वास्थ्य-लिंग डेटा को नीति में एकीकृत करता है।
 - विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट प्रतिवर्ष प्रकाशित करता है।
 - सरकारों, नागरिक समाज संगठनों और युवा समूहों के साथ साझेदारी।
- पुरस्कार एवं दिवस: संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या पुरस्कार, विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई)।

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

शिपकी ला दर्रा(Shipki La Pass)

संदर्भ

हिमाचल प्रदेश में शिपकी ला दर्रा, जो पहले भारत-चीन सीमा पर अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण प्रतिबंधित था, को संपर्क और स्थानीय विकास को बढ़ावा देने के लिए सीमा पर्यटन के लिए खोल दिया गया है।

भारत के प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

लेह-लद्दाख में प्रमुख पर्वतीय दर्रे

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
चांग ला	लेह से पैगोंग झील
बारा-लाचा ला " लद्दाख के प्रवेश द्वार" के रूप में जाना जाता है	ज़ांस्कर रेंज के माध्यम से लाहौल और लद्दाख को जोड़ता है।
खारदुंग ला	नुब्रा घाटी में प्रवेश; तिब्बती पर्वतमाला
इमिस ला	लद्दाख से तिब्बत; हान्ले घाटी में प्रवेश
ज़ोजी ला	द्रास: कश्मीर घाटी, सिंधु घाटी और सुरू घाटी को जोड़ता है
तांगलांग ला	देब्रिंग को लद्दाख में ग्या से जोड़ता है

जम्मू और कश्मीर के प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
काराकोरम दर्रा	काराकोरम पर्वतमाला; भारत और चीन को जोड़ता है
पीर पंजाल दर्रा	कश्मीर घाटी और राजौरी
बनिहाल दर्रा	जम्मू से श्रीनगर (अब जवाहर सुरंग द्वारा बाईपास)
बुर्ज़ेल दर्रा	अस्तोर घाटी (कश्मीर) से देवसाई मैदान (लद्दाख)
पेन्सी ला	हिमालय पर्वतमाला के माध्यम से कश्मीर को कारगिल से जोड़ता है

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
शिपकी ला	किन्नौर (हिमाचल प्रदेश) और तिब्बत
रोहतांग दर्रा	कुल्लू घाटी और लाहौल-स्पीति
बारा-लाचा ला	ज़ांस्कर रेंज; लाहौल और लेह को जोड़ता है

देबसा दर्रा	कुल्लू और स्पीति
-------------	------------------

उत्तराखंड के प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
माना दर्रा	माना (उत्तराखंड) को तिब्बत से जोड़ता है
नीति दर्रा	उत्तराखंड और तिब्बत को जोड़ता है
लिपु लेख दर्रा	उत्तराखंड, नेपाल और तिब्बत का त्रि-जंक्शन
ट्रेल्स दर्रा	पिंडारी और मिलम घाटियों के बीच
मंगशा धुरा	उत्तराखंड को तिब्बत से जोड़ता है
मुलिंग ला	गंगोत्री के उत्तर में, महान हिमालय में

पूर्वोत्तर राज्यों में प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
नाथू ला	सिक्किम (भारत) को तिब्बत (चीन) से जोड़ता है
बोम दी ला	अरुणाचल प्रदेश को तिब्बत (ल्हासा) से जोड़ता है
जेलोप ला	सिक्किम (भारत) को तिब्बत से जोड़ता है
दिफू दर्रा	मैकमोहन रेखा पर; भारत, चीन और म्यांमार की सीमाएँ
दिहांग ला	अरुणाचल प्रदेश और बर्मा (म्यांमार) को जोड़ता है
पंगसौ दर्रा	अरुणाचल प्रदेश को बर्मा (म्यांमार) से जोड़ता है

पश्चिमी घाट के प्रमुख पर्वतीय दर्रे -

दर्रे का नाम	स्थान/जोड़ता है
भोर घाट	पलासदारी और खंडाला (रेल) के बीच; खोपोली और खंडाला (सड़क), महाराष्ट्र
थाल घाट	मुंबई-नासिक रोड; कल्याण और कसारा, महाराष्ट्र को जोड़ता है
पलक्कड़ घाट	नीलगिरि और अन्नामलाई पहाड़ियों के माध्यम से तमिलनाडु और केरल को जोड़ता है
शेनकोटा गैप	शेनकोटा और पुनालुर के माध्यम से मदुरै (तमिलनाडु) और कोट्टायम (केरल) को जोड़ता है

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

नई 'वजन घटाने वाली' दवाएँ

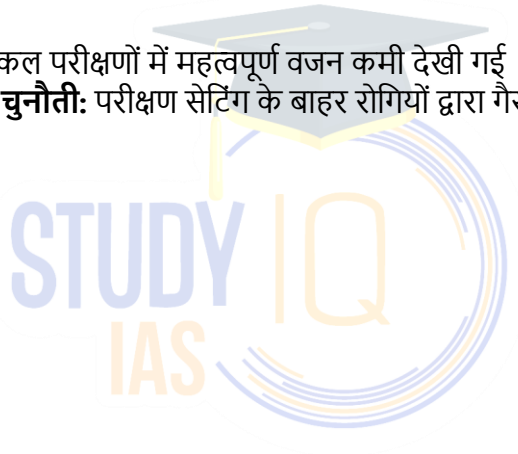
संदर्भ

एक अमेरिकी अध्ययन में पाया गया कि वजन घटाने वाली दवाएँ सेमाग्लूटाइड और टिर्जेपेटाइड वास्तविक जीवन में उतना वजन कम नहीं करतीं जितना कि क्लिनिकल ट्रायल्स में देखा गया था। इसका मुख्य कारण यह है कि मरीज इलाज को जल्दी बंद कर देते हैं या दवा की कम खुराक लेते हैं।

दवाओं के बारे में (सेमाग्लूटाइड और टिर्जेपेटाइड) -

- **प्रकार:** इंजेक्टेबल GLP-1 रिसेप्टर एगोनिस्ट
- **उपयोग:** मूल रूप से टाइप-2 मधुमेह के लिए स्वीकृत और अब मोटापे और वजन प्रबंधन के लिए भी प्रयोग में ली जाती है
- **उदाहरण:**
 - **सेमाग्लूटाइड** (ब्रांड नाम: ओज़ेम्पिक, वेगोवी)
 - **टिर्जेपेटाइड** (ब्रांड नाम: मौंजारो)
- **कार्यप्रणाली:**
 - रक्त शर्करा को नियंत्रित करने के लिए GLP-1 हार्मोन की नकल करता है
 - भूख को कम करता है और पेट खाली करने की प्रक्रिया को धीमा करता है, जिससे वजन कम होता है
- **प्रभावशीलता:** क्लिनिकल परीक्षणों में महत्वपूर्ण वजन कमी देखी गई
- **वास्तविक जीवन की चुनौती:** परीक्षण सेटिंग के बाहर रोगियों द्वारा गैर-अनुपालन और खुराक में कमी के कारण कम प्रभाव

स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)



न्यूट्रीनो(Neutrino)

संदर्भ

जर्मनी के KATRIN प्रयोग ने न्यूट्रीनो के द्रव्यमान की एक नई और अधिक सटीक ऊपरी सीमा निर्धारित की है — 0.8 इलेक्ट्रॉन वोल्ट से कम। यह खोज ब्रह्मांड के सबसे रहस्यमय कणों की हमारी समझ को और गहरा बनाती है।

न्यूट्रीनो के बारे में -

- **प्रकृति:** न्यूट्रीनो लगभग द्रव्यमानहीन, विद्युत रूप से तटस्थ उपपरमाण्विक कण(subatomic particles) हैं जो पदार्थ के साथ अत्यंत कमजोर रूप से अंतःक्रिया करते हैं।
- **पता लगाने में कठिनाई:** क्योंकि वे शायद ही कभी अन्य कणों के साथ परस्पर क्रिया करते हैं, इसलिए न्यूट्रीनो का पता लगाना अत्यंत कठिन है।
- **खोज का कालक्रम:**
 - सर्वप्रथम 1930 में वोल्फगैंग पॉली द्वारा इसकी भविष्यवाणी की गई थी।
 - प्रयोगात्मक रूप से 1956 में इसकी खोज की गई।
 - शुरू में इसे द्रव्यमान रहित माना गया था, लेकिन बाद में पाया गया कि इसका द्रव्यमान बहुत कम है।
- **कण परिवार:**
 - न्यूट्रीनो लेप्टॉन परिवार का हिस्सा हैं (जिसमें इलेक्ट्रॉन भी शामिल हैं)।
 - वे प्रोटॉन और न्यूट्रॉन के विपरीत, मजबूत परमाणु बल से प्रभावित नहीं होते हैं।
 - वे केवल कमजोर परमाणु बल और गुरुत्वाकर्षण के माध्यम से अंतःक्रिया करते हैं।
- **उत्पत्ति:**
 - न्यूट्रीनो का निर्माण भारी कणों के हल्के कणों में विघटन से होता है।
 - सामान्य स्रोतों में सूर्य, तारे, सुपरनोवा, परमाणु रिएक्टर और रेडियोधर्मी क्षय शामिल हैं।
- **प्रचुरता:**
 - न्यूट्रीनो ब्रह्मांड में सबसे प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले कण हैं।
 - लगभग 100 ट्रिलियन न्यूट्रीनो मानव शरीर से बिना कोई नुकसान पहुंचाए गुजर जाते हैं।
- **वैज्ञानिक महत्व:**
 - कण भौतिकी के मानक मॉडल में महत्वपूर्ण।
 - तारकीय प्रक्रियाओं, ब्लैक होल के अध्ययन और बिग बैंग और ब्रह्मांडीय विकास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

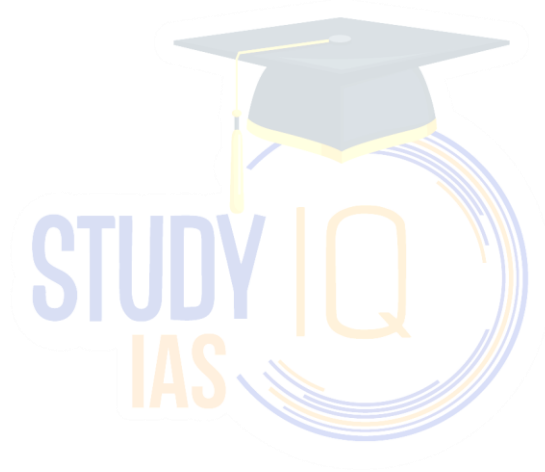
KATRIN क्या है?

- **पूरा नाम:** काल्स्रुहे ट्रिटियम न्यूट्रीनो प्रयोग।
- **स्थान:** काल्स्रुहे, जर्मनी।
- **उद्देश्य:** इलेक्ट्रॉन एंटीन्यूट्रीनो, एक प्रकार का न्यूट्रीनो, के द्रव्यमान को सटीक रूप से मापना।

हाल के निष्कर्ष -

- **नई सीमा निर्धारित:** न्यूट्रीनो द्रव्यमान अब $< 0.8 \text{ eV}$ (इलेक्ट्रॉन वोल्ट) तक सीमित है।
- **परिशुद्धता में सुधार:** यह पिछले अनुमानों की तुलना में 2 गुना अधिक सख्त बाधा है।
- **प्रयुक्त विशाल डेटा:** ट्रिटियम क्षय से 36 मिलियन इलेक्ट्रॉनों के विश्लेषण पर आधारित।
- **कोर विधि:** न्यूट्रीनो द्रव्यमान का अनुमान लगाने के लिए ट्रिटियम बीटा क्षय में इलेक्ट्रॉन ऊर्जा को मापना।
- **विशाल सेटअप:** 200 टन वजनी स्पेक्ट्रोमीटर ने काल्स्रुहे तक 8,600 किलोमीटर की यात्रा की।
- **वैज्ञानिक प्रभाव:** डार्क मैटर, ब्रह्माण्ड विज्ञान और मानक मॉडल भौतिकी को समझने में मदद करता है।

- **भविष्य के लक्ष्य:** यह निर्धारित करना कि क्या न्यूट्रिनो मेजराना कण(अपने स्वयं के प्रतिकण) हैं।
स्रोत: [TheHindu](https://www.thehindu.com)

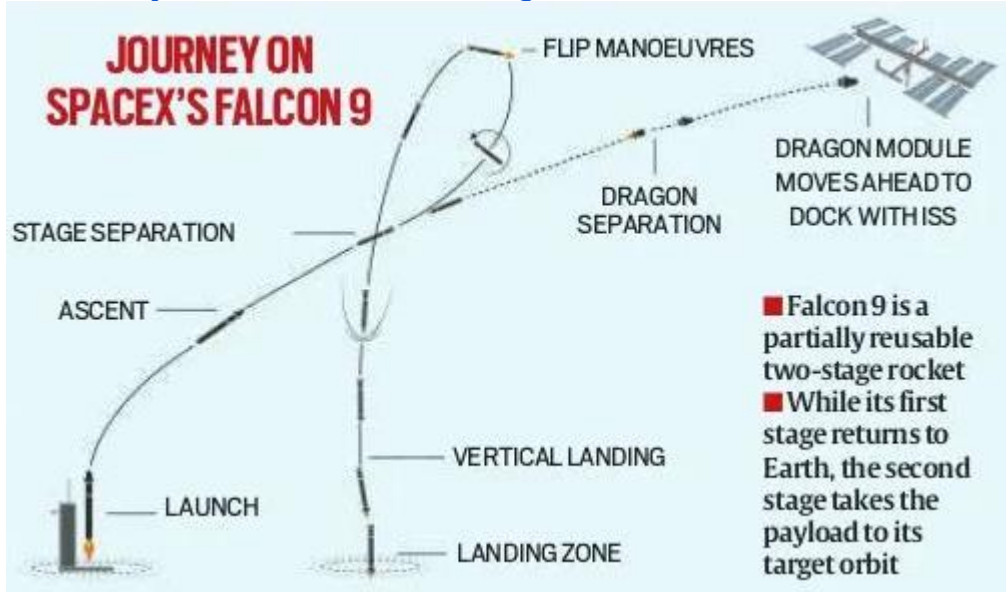


अंतरिक्ष यात्री अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक कैसे पहुंचते हैं?

संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) के लिए एक्सओम-4 मिशन का प्रक्षेपण फ्लोरिडा के केप कैनावेरल स्थित केनेडी अंतरिक्ष केंद्र से किया जाएगा।

अंतरिक्ष यात्री अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक कैसे पहुंचते हैं?



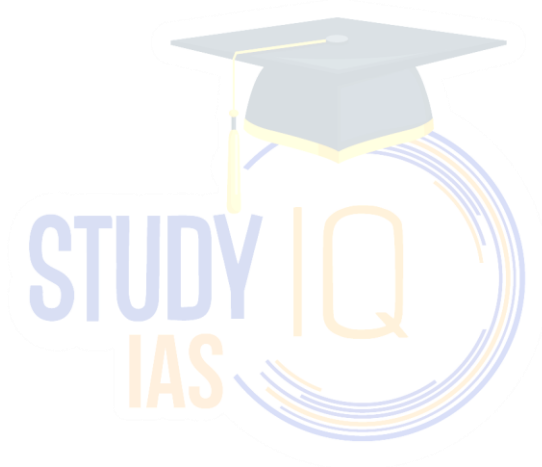
- **प्रक्षेपण पूर्व तैयारी:** अंतरिक्ष यात्रियों को कठोर प्रशिक्षण और तैयारी से गुजरना पड़ता है।
 - वैज्ञानिक एक सटीक समय स्लॉट का चयन करते हैं जब अंतरिक्ष यान का प्रक्षेपण पथ ISS की कक्षा के साथ संरेखित होता है।
 - अंतरिक्ष यात्री फ्लोरिडा के केनेडी अंतरिक्ष केंद्र में फाल्कन 9 रॉकेट के ऊपर लगे क्रू ड्रैगन अंतरिक्ष यान में सवार होते हैं।
- **प्रक्षेपण और आरोहण:**
 - फाल्कन 9 रॉकेट लंबवत रूप से ऊपर उठता है।
 - पहला चरण (बूस्टर) 9 मर्लिन इंजनों द्वारा संचालित, पृथ्वी के घने वायुमंडल के माध्यम से अंतरिक्ष यान को आगे बढ़ाता है।
 - अंतरिक्ष के किनारे (~ 80-100 किमी की ऊँचाई) के आसपास, पहला चरण अलग हो जाता है और पुनः उपयोग के लिए पृथ्वी पर वापस आ जाता है।
 - दूसरा चरण (एकल मर्लिन इंजन) ड्रैगन कैप्सूल को कक्षा में आगे बढ़ाता रहता है।
- **कक्षीय सम्मिलन:**
 - कक्षा में पहुंचने के बाद, ड्रैगन अंतरिक्ष यान दूसरे चरण से अलग हो जाता है।
 - अंतरिक्ष यान प्रारंभ में ISS कक्षा से थोड़ा नीचे (~ 200-250 किमी. ऊँचाई) एक अण्डाकार (अंडाकार) कक्षा में प्रवेश करता है।
- **मिलन स्थल और कक्षा उत्थान:** अगले कई घंटों में, ड्रैगन कक्षीय उत्थान क्रियाएं करता है।

यात्रा अवधि

- **क्रू ड्रैगन:** लगभग 28 घंटे (नया अंतरिक्ष यान, व्यापक प्रणाली जांच)।
- **रूसी सोयुज अंतरिक्ष यान:** 8 घंटे में ISS तक पहुंच सकता है (अनुकूलित, अच्छी तरह से परीक्षण किया गया मनुवर)।

- **दृष्टिकोण और डॉकिंग:**
 - जैसे ही ड्रैगन ISS के निकट पहुंचता है (लगभग 200 मीटर के अंदर), वह "कीप-आउट स्फीयर" में प्रवेश कर जाता है, जो ISS के चारों ओर एक सुरक्षा क्षेत्र है।
 - **स्वायत्त डॉकिंग:** ड्रैगन जीपीएस, कैमरा और लेजर आधारित लाइडार सेंसर का उपयोग करके खुद को संरेखित करता है, जिससे सटीक स्थिति का पता लगाना संभव हो जाता है।
 - अंतरिक्ष यान धीरे-धीरे ISS पर डॉकिंग पोर्ट की ओर बढ़ता है, ठीक उसी गति से, ISS के सापेक्ष प्रभावी रूप से स्थिर रहता है।
- **डॉकिंग और हैच खोलना:**
 - सफल डॉकिंग के बाद, अंतरिक्ष यान को सुरक्षित कर लिया जाता है और उसकी संपूर्ण सुरक्षा जांच की जाती है (लगभग 1-2 घंटे)।
 - एक बार रास्ता साफ हो जाने पर, ड्रैगन और ISS के बीच के द्वार खुल जाते हैं, जिससे अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष स्टेशन में प्रवेश कर सकते हैं।

स्रोत: [Indian Express](#)



केरल वन्यजीव अधिनियम में संशोधन क्यों चाहता है?

संदर्भ

केरल वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में संशोधन चाहता है ताकि मानव आवास में प्रवेश करने वाले जंगली जानवरों को मारने की अनुमति दी जा सके।

वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 में संशोधन के लिए केरल के अनुरोध के पीछे कारण -

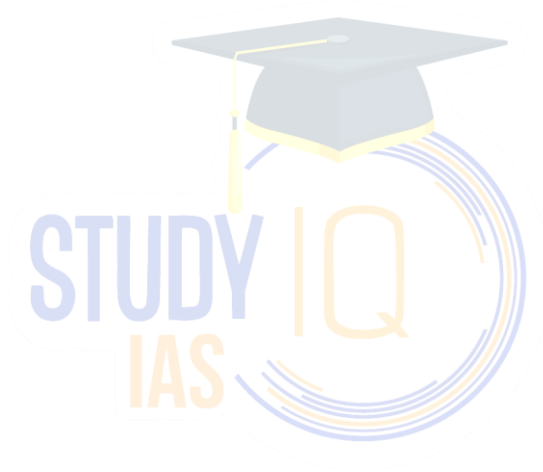
- **बढ़ता मानव-वन्यजीव संघर्ष:**
 - **हॉटस्पॉट:** 941 गांवों में से 273 को संघर्ष क्षेत्र के रूप में चिह्नित किया गया।
 - **हताहत:** 919 मौतें, 8,967 घायल (2016-2025)।
 - **समस्याग्रस्त प्रजातियाँ:** बाघ, तेंदुआ, हाथी, जंगली सूअर, बोनेट मकाक, मोर।
- **कुछ प्रजातियों की जनसंख्या विस्फोट:** जंगली सूअरों और बोनेट मैकाक की संख्या में अनियंत्रित वृद्धि के कारण फसलों पर लगातार हमले और संपत्ति की क्षति हो रही है।
- **निवारक उपायों की विफलता:** बाड़ लगाने और स्थानान्तरण जैसे पारंपरिक तरीके संघर्ष को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विफल रहे हैं।
 - वर्तमान जंगली सूअर नियंत्रण प्रणाली (लाइसेंस प्राप्त शूटर) अव्यावहारिक दिशानिर्देशों के कारण अप्रभावी साबित हुई है।
- **कानूनी और प्रशासनिक बाधाएं:** मौजूदा कानूनों के तहत कठोर प्रक्रियाएं देरी पैदा करती हैं और समय पर हस्तक्षेप को रोकती हैं।
 - अदालती आदेश और नियम जंगली जानवरों के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई को प्रतिबंधित करते हैं।

वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के तहत मौजूदा प्रावधान -

- **अधिनियम का उद्देश्य:** वन्यजीवों और पर्यावासों का संरक्षण एवं संरक्षण।
 - वन्यजीवों के अवैध शिकार, शिकार और अवैध व्यापार की रोकथाम।
- **अनुसूची प्रणाली:**
 - **अनुसूची I और II:** उच्चतम सुरक्षा। इन अनुसूचियों के अंतर्गत आने वाले जानवरों का शिकार करना, उन्हें मारना या उनका व्यापार करना पूरी तरह से प्रतिबंधित है, सिवाय मुख्य वन्यजीव वार्डन द्वारा अधिकृत विशिष्ट मामलों के।
 - **अनुसूची III और IV:** कम सुरक्षा, लेकिन शिकार विनियमित।
 - **अनुसूची V:** जिन पशुओं को नाशक माना जाता है, उनका शिकार कम प्रतिबंधों के साथ किया जा सकता है।
 - **अनुसूची VI:** विशिष्ट पौधों के लिए संरक्षण।
- **प्राधिकार एवं शक्तियां:**
 - मुख्य वन्यजीव वार्डन को केवल तभी हत्या की अनुमति देने का अधिकार है, जब:
 - पशु को सुरक्षित रूप से पकड़ा या स्थानांतरित नहीं किया जा सकता।
 - पशु मानव जीवन के लिए तत्काल खतरा पैदा करते हैं।
 - **जिला कलेक्टर (कार्यकारी मजिस्ट्रेट):** सार्वजनिक उपद्रवों के प्रबंधन के लिए सीआरपीसी के तहत शक्तियां प्राप्त हैं, लेकिन वन्यजीव मामलों में कानूनी सीमाओं का सामना करना पड़ता है।
- **संरक्षित पशुओं के लिए विशेष शर्तें (अनुसूची I):** अनुसूची I के अंतर्गत आने वाले पशुओं के लिए विशेष अनुमति और निम्नलिखित सलाह का पालन आवश्यक है:
 - बाघों के लिए राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए)।
 - हाथियों के लिए प्रोजेक्ट एलीफेंट दिशानिर्देश।
- **प्रजातियों को हानिकारक जानवर घोषित करने का प्रावधान (धारा 62):** केन्द्र सरकार विशिष्ट अवधि और क्षेत्रों के लिए कुछ पशुओं को "हानिकारक जानवर" घोषित कर सकती है।

- इससे मानव जीवन या कृषि को खतरा पहुंचाने वाली आबादी को नियंत्रित करने के लिए शिकार प्रतिबंधों में अस्थायी रूप से ढील दी गई है।

स्रोत: [Indian Express](#)



समाचार में स्थान

विल्नियस(Vilnius)



समाचार? नाटो महासचिव मार्क रूटे ने विल्नियस में B9 और नॉर्डिक शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

विल्नियस के बारे में -

- लिथुआनिया की राजधानी और सबसे बड़ा शहर।
- स्थित: नेरिस (रूसी: विलिया) और विल्निया नदियों के संगम पर।

लिथुआनिया के बारे में -

- भौतिक विशेषताएँ: मैदान, पहाड़ियाँ, अनेक झीलें और नदियाँ; बाल्टिक तटरेखा; क्यूरोनियन स्पिट (यूनेस्को विरासत स्थल)।
- सीमाएँ: लातविया (उत्तर), बेलारूस (पूर्व और दक्षिण-पूर्व), पोलैंड (दक्षिण), रूस का कलिननिग्राद ओब्लास्ट (दक्षिण-पश्चिम)

संपादकीय सारांश

ट्रम्प युग की अस्थिरता ने भारत और यूरोप को करीब ला दिया है

संदर्भ

बदलती वैश्विक व्यवस्था, खास तौर पर ट्रंप युग की अनिश्चितता के कारण, पश्चिमी गठबंधन के भीतर दरारें पैदा हो चुकी है। इन व्यवधानों के बीच, भारत और यूरोप ने स्थिरता, बहुध्रुवीयता और आर्थिक विविधीकरण में आपसी हितों से प्रेरित होकर नया रणनीतिक संरेखण पाया है।

ट्रम्प युग की अस्थिरता ने भारत और यूरोप को कैसे करीब ला दिया है -

- **अमेरिका की अप्रत्याशितता:** गठबंधनों के प्रति ट्रम्प का लेन-देन संबंधी दृष्टिकोण (जैसे, नाटो, फाइव आइज़)।
 - यूक्रेन और वैश्विक सुरक्षा के प्रति अमेरिकी प्रतिबद्धताओं पर सवाल उठाना।
- **यूरोप की सामरिक स्वायत्तता की दिशा में प्रयास:** फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन यूरोपीय संघ के नेतृत्व वाले रक्षा तंत्र को मजबूत कर रहे हैं।
 - हिंद-प्रशांत क्षेत्र में विविध साझेदारों की यूरोप की खोज भारत के सामरिक हितों के अनुरूप है।
- **भारत का संतुलनकारी कार्य:** अमेरिका-चीन प्रभुत्व वाली व्यवस्था में भारत यूरोप को एक "स्विंग स्टेट" के रूप में देखता है।
 - दोनों पक्ष अब द्विपक्षीय और बहुपक्षीय भागीदारी (जैसे, यूरोपीय संघ-भारत टीटीसी, एफटीए वार्ता, आईएमईसी गलियारा) को प्राथमिकता दे रहे हैं।

बढ़ते भारत-यूरोप संबंधों का महत्व -

- **भू-राजनीतिक स्थिरता:** बहुध्रुवीयता और नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था में साझा हित।
 - चीन की आक्रामकता का मुकाबला करने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग।
- **आर्थिक सहयोग:** भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) आसन्न।
 - महत्वपूर्ण खनिजों, एआई, हरित तकनीक, अंतरिक्ष, क्वांटम कंप्यूटिंग पर संयुक्त प्रयास।
- **रक्षा एवं सामरिक संबंध:** यूरोप की रीआर्म 2025 योजना भारत को सह-विकास के अवसर प्रदान करती है।
 - दीर्घकालिक रक्षा साझेदारी की ओर बढ़ना।
- **कनेक्टिविटी पहल:** चीन के BRI के प्रतिकार के रूप में भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)।
 - उन्नत यूरेशियाई कनेक्टिविटी और सुरक्षित आपूर्ति श्रृंखला।
- **कूटनीतिक लाभ:** यूरोप भारत को उसके पारंपरिक साझेदारों (जैसे, अमेरिका, रूस) से कहीं अधिक रणनीतिक गहराई प्रदान करता है।
 - जी-7 प्रारूपों और सुरक्षा वार्ताओं में भारत की भागीदारी इसकी बढ़ती हुई प्रतिष्ठा को रेखांकित करती है।

भारत-यूरोप सहयोग में चुनौतियाँ -

- **भिन्न विदेश नीति प्राथमिकताएं:** भारत में मानवाधिकारों और घरेलू नीतियों पर यूरोपीय संघ का मानक रुख।
 - भारत की सामरिक स्वायत्तता बनाम यूरोप की संस्थागत बहुपक्षवाद।
- **धीमी नौकरशाही और व्यापार वार्ता:** टैरिफ, डेटा गोपनीयता और आईपी अधिकारों पर असहमति के कारण भारत-यूरोपीय संघ एफटीए वार्ता 2007 से विलंबित रही है।
- **चीन कारक:** चीन के प्रति यूरोप का मिश्रित रुख भारत के हिंद-प्रशांत दृष्टिकोण के साथ पूर्ण संरेखण में बाधा डालता है।

- **सुरक्षा बाधाएँ:** बढ़ते रक्षा बजट के बावजूद, यूरोप प्रमुख सुरक्षा गारंटियों के लिए अमेरिका पर निर्भर है।
 - तीसरे पक्ष के रक्षा समूहों के प्रति भारत की संवेदनशीलता

आगे की राह -

- **मुद्रा-आधारित अभिसरण का निर्माण:** जलवायु कार्रवाई, आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन, डिजिटल शासन और कनेक्टिविटी जैसे व्यावहारिक सहयोग के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना।
- **रणनीतिक वार्ता को संस्थागत बनाना:** मतभेदों को दूर करने के लिए नियमित शिखर सम्मेलन, कार्य समूह (जैसे टीटीसी) और ट्रैक-1.5/ट्रैक-2 वार्ता।
- **व्यापार वार्ता में लचीलापन:** महत्वाकांक्षी मुक्त व्यापार समझौते से पहले एक संकीर्ण व्यापार समझौते (शीघ्र फसल समझौते) को प्राथमिकता देना।
- **रक्षा संबंधों का विस्तार:** यूरोप की रक्षा आधुनिकीकरण योजना के अंतर्गत संयुक्त अनुसंधान एवं विकास, तकनीक साझाकरण और सह-उत्पादन को बढ़ावा देना।
- **बहुपक्षीय मंचों का लाभ उठाना:** जी7, आई2यू2 और ईयू+ प्रारूपों में भारत की आवाज को मजबूत करना, तथा पश्चिम और वैश्विक दक्षिण के बीच एक सेतु के रूप में अपनी स्थिति बनाना।

स्रोत: [Indian Express: Old Continent Rising](#)

